Dr. Kumari Priyanka

History department

H.D Jain college, ara

Notes for B.A part 3,paper 5

Topic:–सल्तनतकालीन साहित्य (Literature under Sultanate)

सल्तनत काल साहित्यिक प्रगति का भी युग था। शिक्षा के विकास ने साहित्य को बढ़ावा दिया। कागज के प्रचलन और भक्ति-आंदोलन तथा सूफीवाद के उदय ने साहित्यिक प्रगति को बढ़ावा दिया। फलस्वरूप, अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में अनेक ऐतिहासिक, धार्मिक ग्रंथों एवं काव्य, नाटक तथा गद्य-पद्य की रचना हुई। साहित्यिक विकास को तत्कालीन शासक वर्ग एवं कुलीन-वर्ग ने भी संरक्षण एवं प्रोत्साहन दिया।

अरबी-साहित्य - अरबी साहित्य अत्यंत प्राचीन है। 9 वीं शताब्दी तक अरबी में महत्त्वपूर्ण ग्रंथों एवं विधानों की रचना हो चुकी थी। यद्यपि 10 वीं शताब्दी से तुर्कों में फारसी-भाषा हो प्रधान बन गई, तथापि अरबी बिलकुल ही लुप्त नहीं हो गई। फीरोज तुगलक के समय में अरबी के प्रसिद्ध ग्रंथों का फारसी में अनुवाद किया गया। भारत में अरबी दार्शनिकों एवं विद्वानों के एक छोटे वर्ग तक ही सीमित रहीं। सिंध में अरबी में कुछ ग्रंथ लिखे गए। भारत से संबद्ध अरबी की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें अलबेरुनी की किताब-अल-हिंद एवं कानून-ए-मसूदी हैं। अरबी की अन्य प्रमुख पुस्तक है हिदायत-अल-फिक, नजुल-अम्माल, तफसिर-अल-कुरान इत्यादि ।

फारसी साहित्य-भारत में तुर्कों के आगमन के साथ ही फारसी भाषा का व्यवहार बड़ गया। सल्तनतकालीन अधिकांश रचनाएँ फारसी भाषा में ही हुई। फारसी एक प्रकार से सल्तनत काल की राजभाषा बन गई। फारसी में ऐतिहासिक ग्रंथ, काव्य और अन्य ग्रंथों की रचना हुई। फारसी के आरंभिक विद्वान अमीर खुसरो और मीर हसन देहलवी थे। अमीर खुस्सो को फारसी का सबसे बड़ा विद्वान माना जाता है। बलबन के पुत्र मुहम्मद के समय से गयासुद्दीन तुगलक के समय तक वह दिल्ली दरबार का प्रमुख कवि एवं विद्वान बना रहा। उसने अनेक काव्यों की रचना की। उसने एक नई फारसी-शैली का ईजाद किया, जो सबक-ए-हिंद या भारतीय शैली के नाम से जानी जाती है। उसकी रचनाओं में प्रसिद्ध हैं खजाक-उल-फुतुह तुगलुकनामा एवं तवारीख-ए-अलाई। मीर हसन देहलवी ने फवाइद-उल-फुआद की रचना की। जिया नवराबी ने तूतीनामा लिखी एवं कोकशाख को फारसी में अनूदित किया। इतिहास को भी अनेक पुस्तकें लिखी गई। ऐतिहासिक ग्रंथों में प्रमुख हैं हसन निजामी को ताज-उल-ममीर, मिनहाजुद्दीन सिराज की तबकाते-नासरी, जियाउद्दीन बरनी की तारीख-ए-फीरोजशाही एवं फतवा-ए-जहाँदारी, शम्स-ए-सिराज अफीक की तारीख-ए-

फीरोजशाही, याहिया-बिन अहमद सरहिंदी की तारीख-ए-मुबारकशाही, इसामी की फुतुह-अस-सलातीन, इब्नेबतूता को रेहाला इत्यादि। अन्य अनेक ग्रंथों की भी विविध विषयों पर फारसी में रचनाएँ हुई।

संस्कृत-साहित्य - फारसी भाषा और साहित्य के विकास के बावजूद संस्कृत क होता रहा। संस्कृत में अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सल्तनत काल में हुई। दार्शनिक ग्रंथों नाटकों, वृत्तांतों, धर्मशास्त्रों पर टिकाएं लिखी गई। हिंदू शासकों ने संस्कृत को संरक्षण का भी विकास नरकासुर विजय, हम्मीर-काव्य, जाम्बवती कल्याणगीतगोविंद हम्मीर-पद-मर्दन आदि उल्लेख किया जा सकता है। विज्ञानेश्वर ने मिताक्षर की रचना की। चंदेश्वर और हेमचंद्र सूरि ने भी संस्कृत में रचनाएं की। इस समय का सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ कल्हण-कृत राजतरंगिणी है।

हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ- अरबी, फारसी और संस्कृत के अतिरिक्त हिंदी, उर्दू एवं क्षेत्रीय भाषाओं में भी रचनाएँ हुई। पश्चिमी उत्तरप्रदेश में खड़ी बोली और ब्रजभाषा हिंदी के विकास का आधार बनी। हिंदी-साहित्य कथानक और विषयवस्तु के आधार पर रासो-साहित्य, सिद्ध साहित्य, जैनसाहित्य, नाथ साहित्य, लौकिक एवं गद्य-साहित्य में विभक्त किया गया है। रासो-साहित्य की प्रसिद्ध कृतियाँ है- पृथ्वीराज रासो, खुमाणरासो, परमालरासो, बीसलदेवरासो इत्यादि । हम्मीरकाव्य और अल्लाहखंड भी वीर रस से सम्बद्ध रचनाएँ हैं। मैथिली के सबसे बड़े विद्वान और कवि विद्यापति हुए। भक्ति-आंदोलन के नेताओं ने हिंदी, उर्दू, खड़ी बोली एवं प्रांतीय भाषाओं में अनेक छंदों, लोकोक्तियों एवं पदों की रचना की।बंगला भाषा एवं साहित्य के विकास में चंडीदास, नरहरि सरकार, माणिक दत्त आदि का मूल्यवान योगदान है। इसी काल में बंगला में रामायण और महाभारत का अनुवाद हुआ। इसी प्रकार, अवधी, राजस्थानी, सिंधी, पंजाबी, कश्मीरी, उड़िया, असमिया, गुजराती एवं दक्षिणभारतीय भाषाओं में भी अनेक मौलिक रचनाएँ लिखी गई।